1 | प्रार्थना

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : प्रार्थना	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने और समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. कविता का सस्वर भावानुकूल वाचन कर सकेंगे।
2. 'प्रार्थना' शब्द का अर्थ बता सकेंगे।
3. अहिंसा, एकता आदि शब्दों पर टिप्पणी कर सकेंगे। वाणी के माधुर्य के प्रभाव को बता सकेंगे।
4. कठिन शब्दों के अर्थ बता सकेंगे और उनका प्रयोग कर सकेंगे।

मूलभाव

कविता में कवि माँ से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे माँ! तू हमें ऐसी शक्ति दे दे कि हम जीवन में सत्य और अहिंसा का पालन कर सकें तथा श्रेष्ठ मार्ग से विचलित न हों।

हम विनयशील बनें और हमारी वाणी में माधुर्य घुला रहे, हम कभी भी कटु वचन न बोलें। हमारे भीतर नैतिक गुणों का समावेश हो, यही हमारी कामना है।

शिक्षण विधि

पाठारंभ पूर्व

- अध्यापक छात्रों से बातचीत करें कि वे जीवन में क्या चाहते हैं? क्या बनना चाहते हैं? ऐसा बनने के लिए किन-किन गुणों की ज़रूरत पड़ती है? क्या ये गुण उनमें हैं? आदि।
- बातचीत के माध्यम से पाठ के मूलभाव तक आएँ, प्रार्थना शब्द का अर्थ व उसका विधि-विधान बताएँ।

पाठारंभ

- छात्र प्रार्थना का दो–तीन बार आदर्श वाचन करें।
- छात्रों से अनुकरण वाचन कराएँ।
- सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता आदि शब्दों के अर्थ घटनाओं एवं प्रसंगों द्वारा समझाएँ।
- बताएँ कि विनयशील होना क्या होता है और मीठे वचनों का सुनने वाले पर क्या प्रभाव पड़ता है?
- कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ तथा कविता का सरलार्थ और भावार्थ बताएँ।
- अंत में सामूहिक रूप से प्रार्थना का पुनः पाठ करें और आनंद लें।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. कवि माँ से सत्य, अहिंसा, प्रेम, एकता, विनयशीलता, मृदुभाषा और नैतिकता आदि गुण माँग रहा है।
2. कवि माँ अंबे से ये गुण इसलिए माँग रहा है ताकि वह एक अच्छा इनसान बने और उन्नति के पथ पर आगे बढ़ता जाए।
3. छात्र स्वयं करें।

लेखिनी से

1. (क) विनयशीलता, मृदु भाषा ही
जीवन की पतवार बने।

(ख) विजयी सत्य हमेशा होवे
बने अहिंसा हितकारी।

(ग) रहे सदा आकर्षित करती
नैतिकता की छवि प्यारी।

2. (*iv*) सत्य, अहिंसा, प्रेम और एकता को

भाषा से

बात वर्ण की

1. आधार – आ + ध् + आ + र् + अ
विनय – व् + इ + न् + अ + य् + अ
जीवन – ज् + ई + व् + अ + न् + अ

2. **वर्णमाला क्रमानुसार शब्द**

अंबा **आ**धार **ए**कता **ज**य **प**थ **भा**षा **व**रदान **ह**मेशा

बात शब्द की

विलोम शब्द

सत्य – असत्य
अहिंसा – हिंसा
प्रेम – घृणा

विजय – पराजय
हित – अहित
जीवन – मृत्यु
मृदु – कठोर

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

- **मन पाखी बन** और **ज्ञान गोता** में दी गई गतिविधियों के लिए अध्यापक बच्चों को आवश्यक निर्देश दें और बच्चे स्वयं करें।

2 | हाकिम का न्याय

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : हाकिम का न्याय	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने और समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का शुद्ध वाचन कर सकेंगे।
2. राधा भेड़ के दूध से क्या-क्या बनाती थी?
3. वह घी क्यों बेचना चाहती थी?
4. उसका घी किस तरह चोरी हो गया?
5. घी की मटकी पाने के लिए उसने क्या किया?
6. हाकिम ने सच्चाई जानने के लिए क्या उपाय अपनाया।
7. राधा को न्याय कैसे मिला?

मूलभाव

पलभर की असावधानी समस्या का कारण बन सकती है, इसलिए सदैव सावधान रहना तथा हाकिम की बुद्धिमानी से परिचित होना।

शिक्षण विधि
पाठारंभ पूर्व ◆ असावधानी से घटी दुर्घटना संबंधी किसी लघु कहानी से बात शुरू करें। ◆ उस असावधानी का परिणाम बताएँ। ◆ उस समस्या का हल कैसे निकला, इस पर चर्चा करते हुए पाठ शुरू करें।

पाठारंभ

- शिक्षक/शिक्षिका पाठ का आदर्श वाचन करें और छात्रों से अनुकरण वाचन कराएँ।
- पाठ में आए कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ तथा प्रश्नोत्तर शैली में पाठ को आगे बढ़ाएँ।
- राधा के परिश्रमी स्वभाव, बचत की आदत, घर की ज़रूरतें पूरी करने का प्रयास, दूसरी स्त्री द्वारा घी की मटकी चुराने, बेईमानी करने तथा राजा द्वारा बुद्धिमानी पूर्वक न्याय करने पर चर्चा करें। इसमें छात्रों की बातें अवश्य सुनें।
- छात्रों को परिश्रम करने, बचत करने, चोरी और बेईमानी न करने तथा किसी समस्या का समाधान सोच-विचार करने की प्रेरणा एवं सीख दें।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. राधा दूध से दही जमाती थी, दही से मक्खन निकालती थी। छाछ पी लेती थी और मक्खन से घी निकालती थी।
2. दूसरी औरत ने कहा कि मैंने गाय पाली जो बहुत दूध देती है। गाय के दूध से घी तैयार किया। भला एक भेड़ के दूध से एक मटकी घी कैसे जमा हो सकता है?
3. राधा की समझदारी और संयम के गुण को देखकर हाकिम ने न्याय दिया।

लेखिनी से

1. जरूरत का सामान खरीदने के लिए राधा ने सोचा कि यदि घी नगर में बेचा जाए तो काफी पैसे मिल जाएँगे।
2. राधा को नींद आने पर उसकी घी की मटकी दूसरी औरत ने ले ली।
3. हाकिम ने दोनों औरतों की संयम तथा समझदारी देखकर न्याय किया।
4. (क) दूसरी औरत ने राधा से कहा।

   (ख) दूसरी औरत ने हाकिम से कहा।

   (ग) हाकिम ने दोनों औरतों से कहा।

भाषा से

बात वर्ण की

मक्खी, तुम्हें

बात शब्द की

1. ज़ायकेदार, ईमानदार, शानदार, सलीकेदार
2. **राधा**–शांत, ईमानदार, समझदार, संयमी

   दूसरी स्त्री–असंयमी, बेईमान, नासमझ, क्रोधी
3. पानी – जल, अंबु

   गाय – धेनु, गौ

   वर्षा – मेंह, बरखा
4. **स्त्रीलिंग**–मटकी, औरत, बालटी

   पुल्लिंग–पानी, जूता, रास्ता

बात वाक्य की

1. (क) मैं घी बेचकर सामान खरीदूँगी।

   (ख) वे कीचड़ में घुसकर जूता ढूँढ़ने लगीं।

   (ग) वह मटकी उठाकर ले गई।
2. ने, ने, की, के लिए

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

- **मन पाखी बन** एवं **ज्ञान गोता** के उत्तर अपनी-अपनी समझ से स्वयं करेंगे।

3 | वृक्षराज

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : वृक्षराज	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने-समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का शुद्ध वाचन कर सकेंगे।
2. वाचन करते समय शेर के संवाद को क्रोध के स्वर में तथा कबूतरी और उल्लू के संवादों को रुआँसे स्वर में पढ़ सकेंगे।
3. चींटी की तीखी आवाज़ और शेर के हक्का-बक्का खड़ा होने को वाणी के अभिनय से प्रस्तुत कर सकेंगे।
4. छात्र अलग पशु-पक्षियों के संवादों को उन्हीं के भाव में दुहरा सकेंगे।
5. किसी स्थान के हरा-भरा होने, सुंदर लगने पर अपनी राय जाहिर कर सकेंगे।
6. सुंदरता कठोर दिल को भी कैसे कोमल बना देती है, इसके उदाहरण के रूप में यह कहानी सुना सकेंगे।

मूलभाव

वृक्षराज कई पशु-पक्षियों का बसेरा है। उसके कटने की खबर से पशु-पक्षियों के मन में उपजी संवेदना को पाठ में व्यक्त किया गया है। साथ ही यह भी बताया गया है कि कैसे जंगली पशु-पक्षियों ने वृक्षराज को बचाने का एक बिलकुल नया तरीका ढूँढ़ा।

शिक्षण विधि
पाठारंभ पूर्व ◆ अध्यापक छात्रों से पेड़-पौधों, फूलों-फलों के संबंध में बातचीत करें। हरियाली और सुंदरता के प्रति बच्चों की रुचि जगाएँ।

- स्कूल में होने वाले वन महोत्सव की चर्चा करें।
- बच्चों से पूछें कि यदि जंगल के जीव पेड़ों की रक्षा कर सकते हैं, उन्हें कटने से बचा सकते हैं तो क्या हमें पेड़ों की रक्षा नहीं करनी चाहिए?
- छात्रों के सहमत होने पर कहें कि आओ, पढ़ते हैं कि जंगल के जीवों ने एक वृक्ष की कैसे रक्षा की?

पाठारंभ

- छात्रों के सामने पाठ का आदर्श वाचन करें।
- छात्रों से अनुकरण वाचन कराएँ जिसमें शेर, कबूतरी, उल्लू आदि के भावों का अनुसरण हो।
- बंदरों के सरदार और मोर के संवादों पर छात्रों से चर्चा करें, उन्हें सराहें और सकारात्मक सोच के प्रति आदर के भाव को बढ़ावा दें।
- लकड़हारा भी सुंदर-सजे पेड़ को देखकर कैसे बदल गया, इस पर विस्तार से चर्चा करें।
- कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ और इस बात की जाँच के लिए कि वे समझे हैं या नहीं, वाक्यों में प्रयोग करवा कर देखें।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. सबका हल्ला-गुल्ला सुनकर शेर की नींद खराब हो गई थी, इसलिए उसका मिज़ाज खराब हो रहा था।
2. लकड़हारा वृक्षराज को काटने की योजना बना रहा था।
3. मोर ने वृक्षराज को बचाने के लिए यह तरकीब बताई कि वे सब पूरे पेड़ पर फल-फूल टाँग दें जिससे लकड़हारा उनके भावों को समझ जाए और वह वृक्षराज को न काटे।
4. मिल-जुलकर काम करने से सभी पशु-पक्षियों ने अपने घर और वृक्षराज को कटने से बचा लिया।

लेखिनी से

1. लकड़हारा पेड़ को इसलिए काटना चाहता था, क्योंकि वह लकड़ी को बाज़ार में बेचकर अपना गुज़ारा करता था।
2. लकड़हारे की बेटी ने पेड़ को देखकर उससे अनुरोध किया कि वह इस सुंदर पेड़ को न काटे।
3. लकड़हारे ने अपनी बिटिया से कहा कि अब वह कभी किसी हरे-भरे पेड़ को नहीं काटेगा।
4. (क) आस-पास के सारे पेड़ कट चुके थे।

भाषा से

बात वर्ण की

वर्ण-विच्छेद

गृह – ग् + ऋ + ह् + अ

दृष्टि – द् + ऋ + ष् + ट् + इ

वृक्ष – व् + ऋ + क् + ष् + अ

बात शब्द की

1.

एकवचन	–	**बहुवचन**	**एकवचन**	–	**बहुवचन**
डाली	–	डालियाँ	लकड़हारा	–	लकड़हारे
कुल्हाड़ी	–	कुल्हाड़ियाँ	छत्ता	–	छत्ते
मक्खी	–	मक्खियाँ	रसीला	–	रसीले

2. **दो-दो विशेषण**

(क) गपोड़ी मैना – काली मैना

(ख) सुंदर पेड़ – ऊँचा पेड़

(ग) तीखी आवाज़ – मधुर आवाज़

(घ) रसीले फल – पके फल

बात वाक्य की

1. (क) सबसे पहले समाचार **कौन** लाया?
   (ख) सभी जानवर **किसके पास** एकत्र हुए?
   (ग) शेर **कब** पहुँचा?
   (घ) उल्लू **कहाँ** बैठा था?
   (ङ) शेर की पूँछ में **किसने** काटा?

2. **विराम-चिह्न**

(क) अरे**!** क्यों शोर मचा रहे हो**?**

(ख) सभी जानवर काम में जुट गए**।**

(ग) चलो**,** कोशिश करके देख लें**।**

(घ) चल बिटिया**,** यहाँ से चलें**।**

(ङ) ये वृक्ष को क्यों काटना चाहते हैं**?**

(च) वाह**!** वे दोनों चले गए**।**

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

- **मन पाखी बन** और **ज्ञान गोता** में दी गई गतिविधियों के लिए अध्यापक बच्चों को आवश्यक निर्देश दें और बच्चे स्वयं करें।

4 | सच्चा मित्र

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : सच्चा मित्र	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने-समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का सस्वर वाचन कर सकेंगे।
2. पाठ में वर्णित मित्र के गुणों को बता सकेंगे।
3. अच्छे और बुरे व्यक्ति के गुण-दोषों की चर्चा कर सकेंगे।
4. आँसू पोंछना, पावन सुरसरि, कपट न मन में रहता आदि को स्पष्ट कर सकेंगे।
5. अच्छे मित्र के गुणों को लिखकर अपने मित्र को भेज सकेंगे।
6. अपने और अपने मित्र के गुण-दोषों को बता सकेंगे।

मूलभाव

प्रस्तुत कविता सच्चे मित्र के गुणों का बखान करती है। सच्चा मित्र हमारे जीवन को खुशियों से भर देता है, यही इस कविता में बताया गया है।

शिक्षण विधि

पाठारंभ पूर्व

- छात्रों से पूछें कि तुम्हारा मित्र कौन है?
- तुम मित्र के लिए क्या करते हो? और तुम्हारा मित्र लिए क्या करता है? आदि।
- छात्रों को तुलसी जी की उन चौपाइयों को भी सुनाइए जिनमें मित्र के गुणों का वर्णन है; जैसे–
  जे न मित्र दुख होई दुखारी। तिनहु विलोकत पातक भारी।।

- छात्रों को यह भी बताएँ कि बहुत सूझ-बूझ के साथ मित्र बनाना चाहिए। मित्र बनाने के लिए हमें व्यक्ति में क्या देखना चाहिए, आइए पढ़ते हैं इस कविता में।

पाठारंभ

- कविता का दो-तीन बार आदर्श वाचन करें।
- छात्रों से अनुकरण वाचन कराएँ जिसमें लय और आरोह-अवरोह का ध्यान रखें।
- कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ तथा मित्र संबंधी गुणों की विशेष व्याख्या करें।
- पाठ की व्याख्या करते समय बीच-बीच में प्रश्न करें।
  कल्याण कामना, पावन सुरसरि, सुमन सरीखे जैसे शब्दों को समझाएँ और उन पर टिप्पणी करें।
- अंत में कविता का आनंद लेने के लिए सामूहिक वाचन करें।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. (क) हाँ (ख) नहीं (ग) नहीं (घ) हाँ (ङ) हाँ
   (ख) जिसके मन में कल्याण की भावना भरी होती है उसी के आँगन में पावन सुरसरि बहती है।

लेखिनी से

1. जो अवसर पर काम आएँ, सरल और सीधे हों, सत्य बोलें, दूसरों को आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें, दीन-दुखियों को गले लगाएँ, परोपकारी हों, दूसरों के आँसू पोंछे, सदा मुसकराते रहें, वही सच्चे मित्र कहलाने के योग्य होते हैं।
2. (क) (*ii*) फूल से (ख) (*ii*) दूसरों के कल्याण की
3. कविता की पंक्तियाँ स्वयं चुनें।
4. अपने **हित** की जो न कभी भी करते हैं **अभिलाषा**,
   सीधी, सरल, **सत्य से पूरित होती जिनकी भाषा।**

भाषा से

बात वर्ण की

सच्चा – स् + अ + **च्** + **च्** + आ
अभिलाषा – अ + **भ्** + इ + **ल्** + आ + **ष्** + आ
प्रोत्साहित – **प्** + **र्** + ओ + **त्** + **स्** + आ + **ह्** + इ + **त्** + अ
सुरसरि – **स्** + उ + **र्** + अ + **स्** + अ + **र्** + इ

बात शब्द की

1. सुलेख – सु + लेख | सुवास – सु + वास | सुगंध – सु + गंध
   सुमार्ग – सु + मार्ग | सुकर्म – सु + कर्म | सुपुत्र – सु + पुत्र

2. **समान अर्थ वाले शब्द**

मनुष्य – मानव	चित्त – मन
भलाई – हित	मौका – अवसर
इच्छा – अभिलाषा	नदी – सुरसरि
सच – सत्य	फूल – सुमन
अंदर – भीतर	कर्म – काम

बात वाक्य की

1. (क) गिरगिट **क्षण-क्षण** में अपना रंग बदलता है।
   (ख) हमें **दीन-दुखी** व्यक्तियों की मदद करनी चाहिए।
   (ग) हमें सबकी **कल्याण-कामना** करनी चाहिए।
2. छात्र स्वयं करें।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

मन पाखी बन

1. और **2.** छात्र स्वयं करें।
3. **मेरा सच्चा मित्र**
   (क) अभय मेरा सच्चा मित्र है।
   (ख) वह ईमानदार और स्पष्टवादी है।
   (ग) वह मुझे हमेशा आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है।
   (घ) उसने खेल-कूद, पढ़ाई और स्कूल की अनेक गतिविधियों में पुरस्कार जीते हैं।
   (ङ) मेरा मित्र लाखों में एक है।

ज्ञान गोता

अध्यापक छात्रों को आवश्यक निर्देश दें और छात्र स्वयं करें।

5 | स्वस्थ हैं तन-मन

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका			
पुस्तक	: नवीन संकल्प–4		
विषय	: हिंदी	**दिनांक**	: ....
उपविषय	: स्वस्थ है तन-मन	**अवधि**	: ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने और समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का सस्वर शुद्ध वाचन कर सकेंगे।
2. पाठ में आए कठिन शब्दों का अर्थ बता सकेंगे।
3. 'सेहत हज़ार नियामत' के भाव को बता सकेंगे।
4. सुबह जल्दी उठने के लाभ लिख सकेंगे।
5. खाने में किन चीज़ों को दूर रखें और किन्हें खाएँ, इस पर चर्चा कर सकेंगे।
6. खेलने के लाभ बता सकेंगे और मौसम के अनुकूल परिधान धारण करने के फ़ायदे बता सकेंगे।
7. पाठगत प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

मूलभाव

प्रस्तुत पाठ में बताया गया है कि बच्चों को सेहत के प्रति जागरूक रहना चाहिए। स्वस्थ रहने लिए भोजन, व्यायाम, स्वच्छता और अच्छी नींद लेना आवश्यक है।

शिक्षण विधि

पाठारंभ पूर्व

- छात्रों से खेलों के बारे में चर्चा करें।
- क्रिकेट खेलने के लिए स्वस्थ लोगों का ही चयन क्यों किया जाता है? इस पर चर्चा करें।
- आदमी ताकतवर कैसे बनता है? इस पर छात्रों के उत्तर सुनें।
- इसी तरह की बातचीत से अध्यापक पाठ के मूलभाव तक पहुँचें और छात्रों से कहें कि स्वस्थ रहने के क्या-क्या उपाय हैं, आज हम इसके बारे में पढ़ेंगे।

पाठारंभ

- सर्वप्रथम अध्यापक आदर्श वाचन करें तथा छात्रों से अनुकरण वाचन कराएँ।
- अनुकरण वाचन में तंदुरुस्त, बुज़ुर्ग, उत्साह, एकाग्रता, दिक्कत, स्फूर्तिदायक आदि कठिन शब्दों के उच्चारण पर ध्यान दें।
- अच्छी सेहत वालों के उदाहरण देते हुए उनके भोजन और सोने-जागने को पाठ से जोड़ें।
- आलसी लोगों के पिछड़ने के उदाहरण दें और बताएँ कि आलस्य कैसे हमें पीछे छोड़ देता है।
- खाने के उन पदार्थों पर विशेष टिप्पणी करें जो सेहत के लिए हानिकारक हैं। स्वादिष्ट और पौष्टिक भोजन के लाभ बताएँ, कीटाणुओं से सावधानी हेतु स्वच्छता पर बल दें। दाँत साफ़ रखने और नाखून साफ़ रखने पर विशेष टिप्पणी दें।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. बच्चों को कम-से-कम आठ से नौ घंटे सोना चाहिए।
2. सुबह जल्दी उठने से हमारे शरीर में स्फूर्ति रहती है और पूरा दिन उत्साह भरा गुज़रता है। हमारी याददाश्त और एकाग्रता में वृद्धि होती है तथा प्राकृतिक नज़ारा देखने को मिलता है।
3. फ़ास्ट फ़ूड में पौष्टिक तत्व नहीं होते। इनको अधिक खाने से वज़न बढ़ जाता है, जिससे शरीर बीमारियों से घिर जाता है।
4. भारतीय खाने में सभी पौष्टिक तत्व और विटामिन भरपूर मात्रा में पाए जाते हैं।

लेखिनी से

1. देर तक सोते रहने से पूरे दिन आलस्य-सा बना रहता है और एकाग्रता में कमी आती है।
2. समय पर सोना, समय पर उठना इसलिए ज़रूरी है ताकि मन में दिनभर उत्साह बना रहे, शरीर स्वस्थ रहे और प्रत्येक कार्य समय पर पूरा कर सकें।
3. जल्दी बीमार पड़ने के कारण हैं—देर तक सोना, व्यायाम न करना, पौष्टिक भोजन न करना, आउटडोर गेम्स न खेलना और स्वच्छ न रहना।
4. स्वस्थ रहने के लिए पाठ में समय पर सोना, सुबह जल्दी उठना, व्यायाम करना, संतुलित और पौष्टिक भोजन करना, स्वच्छ रहना, साफ़-सुथरे और मौसम के अनुकूल कपड़े पहनने की बातें बताई गई हैं।
5. (घ) सेहतमंद रहें

भाषा से

बात वर्ण की

एकाग्रता – ए + क् + आ + ग् + र् + अ + त् + आ
उत्साह – उ + त् + स् + आ + ह् + अ
छुट्टी – छ् + उ + ट् + ट् + ई
पौष्टिक – प् + औ + ष् + ट् + इ + क् + अ

बात शब्द की

1. गुण + वान – गुणवान   बल + वान – बलवान
   धैर्य + वान – धैर्यवान   रूप + वान – रूपवान
2. सेहत – स्वास्थ्य   दिक्कत – कठिनाई
   ज़रूरी – आवश्यक   याद्दाश्त – स्मृति
   खास – विशेष   लज़ीज़ – स्वादिष्ट
3.

संज्ञा शब्द	**विशेषण शब्द**	**क्रिया शब्द**
छोटा – छुटपन	अच्छा – अच्छाई	सोचना – सोच
लड़का – लड़कपन	कमज़ोर – कमज़ोरी	खाना-पीना – खान-पान
मित्र – मित्रता	आलसी – आलस्य	खेलना-कूदना – खेल-कूद

बात वाक्य की

वाक्य छात्र स्वयं बनाएँ।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

- **मन पाखी बन** और **ज्ञान गोता** में दी गई गतिविधियों के लिए अध्यापक प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा करें और छात्रों को आवश्यक निर्देश दें।

6 | बकरी और मेमना

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : बकरी और मेमना	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने और समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का सस्वर शुद्ध वाचन कर सकेंगे।
2. बकरी और मेमना नदी की ओर क्यों जा रहे थे?
3. बकरी ने मेमने को क्या सीख दी?
4. बकरी और मेमने ने नदी का किस तरह सम्मान किया?
5. नदी ने उन दोनों को क्या चेताया?
6. भेड़िए के आने पर उन्होंने उसे किस तरह बातों में उलझाया?
7. दोनों ने भेड़िए से किस तरह छुटकारा पाया?

मूलभाव

साहस से काम लेने पर संकट टल जाता है और धैर्य बना रहने पर विपत्ति से बचाव का रास्ता निकल आता है।

शिक्षण विधि
पाठारंभ पूर्व ◆ अध्यापक साहस और धैर्य से जुड़े किसी उदाहरण से बात शुरू करें। ◆ बताएँ कि बड़ों की सलाह जीवन में किस तरह काम आती है। ◆ साहस एवं धैर्य से बड़े संकट से मुक्त हुआ जा सकता है, इस पर चर्चा करते हुए पाठ शुरू करें।

पाठारंभ

- अध्यापक पाठ का आदर्श वाचन करें तथा अनुकरण वाचन छात्रों से करवाएँ।
- कठिन शब्दों का अर्थ बताते हुए पाठ को प्रश्नोत्तर शैली में आगे बढ़ाएँ।
- बकरी के साहस, नदी के जल तथा नदी को प्रणाम करने, भेड़िए को देखकर विपत्ति में साहस एवं धैर्य बनाए रखने, साहस से काम लेने तथा अपनी जान बचाने पर चर्चा करना।
- बकरी द्वारा साहस और धैर्यपूर्वक संकट पर विजय पाने पर एवं उसकी विशेषताएँ बताना।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. साहस से काम लो, तो संकट टल जाता है।
   धैर्य बना रहे, तो विपत्ति से बचाव का रास्ता निकल आता है।
2. नदी ने कहा, "भेड़िया बस आने ही वाला है। पानी पीकर फौरन घर की राह लो।"
3. मेमने ने कहा भेड़िया बहुत बुरा है। तुम उसे अपने पास आने ही क्यों देती हो? पानी पीने से मना क्यों नहीं कर देती?
4. क्योंकि भेड़िये को रोज़ाना शिकार के लिए मारा-मारी करनी पड़ती थी। आज तो शिकार खुद कुर्बान होने जा रहा है।

लेखिनी से

1. नदी ने कहा, "प्यास बुझाना मेरा धर्म है। मैं उसे मना नहीं कर सकती।"
2. धैर्य और साहस–इन दो गुणों के कारण बकरी और मेमना अपनी जान बचा पाए।
3. मेमने ने फटकारा–"कितने गंदे हो तुम! मुँह पर मक्खियाँ भिनभिना रही हैं। लगता है कि महीनों से मुँह नहीं धोया।
4. सुरक्षित स्थान पर पहुँचकर मेमने और बकरी के चेहरों पर उल्लास और आत्मविश्वास था।
5. (क) मेमने ने नदी से (ख) भेड़िए ने मेमने और बकरी से (ग) बकरी ने मेमने से

भाषा से

बात वर्ण की

- माँ, गंदी, घमंडी, वहाँ, गाँठ, जंगल
  पहुँच, मंत्री, मांस, संभव, सँभाल, मुँह

बात शब्द की

1. (क) <u>भेड़िए</u> बुरे <u>हैं</u>।

(ख) बकरियाँ बहुत प्यासी थीं।

(ग) मुँह पर मक्खियाँ भिनभिना रही हैं।

2. बुरा भेड़िया, शीतल मीठा पानी, हलका पेट, गरमागरम भोजन, साफ़ मुँह, ताज़ा गर्म मांस, शुभ दिन, भारी-भरकम शरीर
3. प्यासा, झूठा, कमज़ोर, शीतल
4. कुछ-कुछ, धीरे-धीरे, खेल-खेल, लाल-लाल

बात वाक्य की

1. क्या बेकार की बातें करती है।
2. (क) माँ! प्यास लगी है।

   (ख) अरे वाह! आज तो भोजन भी मिल गया।

   (ग) रुको, मैं आ रहा हूँ।

   (घ) माँ ने हाथ जोड़े, मेमने ने भी जोड़ लिए।

   (ङ) साहस से काम लो, तो खतरा टल जाता है।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

- **मन पाखी बन** और **ज्ञान गोता** के लिए छात्रों को उचित निर्देश दें।

7 | स्वार्थी अंजलि

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : स्वार्थी अंजलि	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने और समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का सस्वर शुद्ध वाचन कर सकेंगे।
2. वे बता सकेंगे कि दादा-दादी अंजलि के यहाँ क्यों आ रहे हैं?
3. वे बता सकेंगे कि अंजलि को दादा-दादी अच्छे लगने के बाद भी वह उन्हें क्यों बर्दाश्त नहीं कर पा रही थी।
4. अंजलि को घर छोटा क्यों लगने लगा, इसका कारण बता सकेंगे।
5. दादा-दादी ने अंजलि की पढ़ने और खान-पान के मामले में कैसे मदद की, इसका उल्लेख कर सकेंगे।
6. माता-पिता ने अंजलि को क्यों डाँटा, इसका कारण बता सकेंगे।
7. अंजलि ने दादा-दादी से फ़ोन पर यह क्यों पूछा कि आप वापस कब आ रहे हैं? वह बता सकेंगे।
8. कठिन शब्दों के अर्थ बता सकेंगे और पाठगत प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

मूलभाव

संयुक्त परिवार के क्या-क्या लाभ हैं; बड़े-बुज़ुर्गों का बच्चों के जीवन पर कैसा सकारात्मक प्रभाव पड़ता है; अकेलापन बच्चों को कैसे स्वार्थी बना देता है–यह सब इस पाठ में बताया गया है।

शिक्षण विधि

पाठारंभ पूर्व

- अध्यापक दादा-दादी या बड़ों द्वारा सुझाए गए किसी उदाहरण से अपनी बात शुरू करें।
- बताएँ कि बड़े-बुज़ुर्ग जीवन में कैसे मदद करते हैं।

- यह भी बताएँ कि आजकल जिस परिवार में केवल एक बच्चा है उस बच्चे का बौद्धिक या मानसिक विकास कैसे प्रभावित है।
- साथ मिलकर रहने के गुण-दोषों की चर्चा छात्रों से अवश्य करें। स्वार्थ को छोड़कर, दूसरे लोगों के लिए भी अवसर देने में लाभ आदि की चर्चा के बाद पाठ शुरू करें।

पाठारंभ

- अध्यापक पाठ का आदर्श वाचन करें। छात्र अनुकरण वाचन करें।
- अनुकरण वाचन में लड़ पड़ने, फटकारने, रुँआसे होने के भाव का ध्यान रखें।
- अध्यापक अंजलि के व्यवहार पर टिप्पणी करें तथा माँ के समझाने-बुझाने की बात भी छात्रों को समझाएँ।
- दादा-दादी के स्नेहभाव तथा अंजलि के रूखे व्यवहार के प्रभाव को छात्रों के सामने रखें।
- दादी-दादा के बिना अंजलि के जीवन के रूखेपन का अहसास छात्रों को कराएँ।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. अंजलि इसलिए नाराज़ थी, क्योंकि उसे दादा-दादी के आने की वजह से अपना कमरा छोड़ना पड़ रहा था।
2. दादा-दादी सवेरे जल्दी उठ जाते थे। दादी नहाने के बाद पूजा करतीं और नाश्ता बनाती थीं। दादा जी अखबार पढ़ते और टी०वी० देखते। अंजलि अपने स्कूल जाती थी।
3. दादी अंजलि के लिए स्वादिष्ट परांठे, सब्ज़ियाँ, मिठाइयाँ, पकौड़े, अचार और सलाद बनाती थीं।
4. अंजलि को अखबार पढ़ने की आदत दादा जी ने डलवाई।

लेखिनी से

1. दादा जी सत्तर साल के हो गए थे। वे गाँव में अकेले रहते थे। अंजलि के माता-पिता उनकी देखभाल करना चाहते थे इसलिए उन्होंने दादा-दादी जी को अपने पास बुलाया था।
2. दादा-दादी के आने और रहने के कारण, उनसे प्यार न होने के कारण और टी०वी० पर मनपसंद कार्यक्रम न देख पाने के कारण अंजलि को अपना घर छोटा लगने लगा था।
3. दादा जी प्रोजेक्ट बनाने और गणित के प्रश्न हल करने में अंजलि की मदद करते थे। उन्होंने उसको अखबार पढ़ने की आदत डाली। बस-स्टॉप तक छोड़ने जाते समय वे दुनियाभर में घटने वाली घटनाओं की उससे चर्चा करते थे।

4. दादा–दादी के जाने के बाद अंजलि को उनकी कमी इसलिए महसूस होने लगी, क्योंकि स्कूल से आने के बाद उससे बात करने वाला कोई नहीं था। संयुक्त परिवार की हलचल और आवाज़ों की जगह खामोशी ने ली थी। अब उसका एकमात्र साथी टी० वी० था।
5. (*ii*) वह अपने माता–पिता की इकलौती संतान थी।
6. विद्यार्थी स्वयं करें।

भाषा से

बात वर्ण की

1. **ज़ और फ़ ध्वनि वाले तीन-तीन नए शब्द**
   ज़ – ज़ोर, ज़मीन, ज़िंदगी
   फ़ – फ़िल्म, फ़ोन, फ़ैशन
2. ड – **ड**र, **ड**ाल, **ड**ोली
   ड़ – पक**ड़**, लक**ड़**ी, ल**ड़**की
   ढ – **ढ**ाल, **ढ**म–**ढ**म, **ढ**ोलक
   ढ़ – **ढ**ूँ**ढ़**ना, ढा**ढ़**स, च**ढ़**ना

बात शब्द की

1. **हमारा व्यवहार**–मुसकराना, खिलखिलाना, हँसना
   हम अच्छा व्यवहार अपनाना चाहेंगे, क्योंकि ऐसा व्यवहार ही मनुष्य को सबका प्रिय बनाता है।
2. छात्र स्वयं करें।
3. आदी – मेरा मित्र कहानी की किताबें पढ़ने का **आदी** है।
   आदि – मैं पिता जी के साथ बाज़ार जाकर रंग, पेंसिल, रबड़ **आदि** लाऊँगा।
   जरा – दादा जी बीमारी के कारण अस्वस्थ हैं, **जरा** के कारण नहीं।
   ज़रा – मुझे आने में **ज़रा** देर हो गई।
   हाल – आज तुम्हारा **हाल** ठीक नहीं लग रहा।
   हॉल – इस **हॉल** में आज एक समारोह है।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

मन पाखी बन

अध्यापक प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा करें और छात्रों को उचित निर्देश दें।

मन पाखी बन

- छात्र स्वयं करें।

8 | हैं प्रीत जहाँ की रीत सदा

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : है प्रीत जहाँ की रीत सदा	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने और समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का सस्वर शुद्ध वाचन कर सकेंगे।
2. भारत के गौरव एवं संस्कृति के बारे में जान सकेंगे।
3. भारत की महानता के बारे में दूसरों को बता सकेंगे।
4. भारत भूमि कितनी पवित्र है, यह जान सकेंगे।
5. भारत में जन्म लेने के कारण गर्व की अनुभूति कर सकेंगे।

मूलभाव

भारत की विभिन्न क्षेत्रों में उन्नति, दुनिया भर में गणित, खगोल विद्या के ज्ञान का आलोक फैलाना, इसकी समृद्धि, पवित्रता एवं महानता का ज्ञान कराना।

शिक्षण विधि

पाठारंभ पूर्व

- छात्रों से यह पूछना कि 'उन्हें उनका घर क्यों अच्छा लगता है?' से बात शुरू करना।
- दुनिया के कुछ देशों का नाम पूछें।
- उन देशों से अपने देश की तुलना करते हुए चर्चा करने के बाद पाठ शुरू करें।

पाठारंभ

- पाठ का सस्वर आदर्श वाचन करें तथा छात्रों से अनुकरण वाचन करवाएँ।
- कठिन शब्दों के अर्थ बताते हुए एवं व्याख्या समझाएँ।
- बच्चों से प्रश्न करके उत्तर बताते हुए पाठ को आगे बढ़ाएँ।
- भारत की गौरव गाथा के बारे में बच्चों को समझाएँ।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. भारत में प्रीत की रीत बताई है।
2. गंगा नदी को 'माँ' कहा जाता है।
3. कवि ने भारत भूमि पर जन्म लिया है, इसी बात पर वे इतराते (गर्व करते) हैं।
4. छात्र स्वयं करें।

लेखिनी से

1. काले-गोरे का भेद नहीं, हर दिल से हमारा नाता है।
2. देश में अभी भी राम-सीता जैसे पावन लोग हैं—इन्हीं के आगे कवि का मन सिर झुकाने को करता है।
3. नदियाँ माँ की तरह सबका पालन-पोषण करती हैं, इसलिए उन्हें 'माँ' कहा जाता है।
4. हम मूर्ति के रूप में ईश्वर को पूजते हैं, तो भला इनसान को आदर नहीं देंगे।
5. हाँ, दया, करुणा, सहानुभूति, भाईचारा, सरलता और सज्जनता, प्रेम-प्यार-दुलार-आदर के हथियार हैं। इनसे दिलों को जीता जा सकता है।

बात वर्ण की

1. बच्चों से शुद्ध उच्चारण करवाएँ।
2. श—आशय, शरबत, शान, अशरफ़
   ष—षट्कोण, षट्रस, विशेष, शेषनाग

बात शब्द की

1. भारत – आर्यावर्त, जंबूद्वीप
   दुनिया – संसार, जगत
   चाँद – राकेश, चंद्रमा
   भगवान – ईश्वर, परमात्मा
   नदी – तटिनी, सरिता
   धरती – वसुधा, पृथ्वी

2. जीरो – शून्य

अंदाज़ा – अनुमान

मुश्किल – कठिन

इनसान – मनुष्य

3. माता – मातृ

काला – श्याम

पत्थर – प्रस्तर

भगवान – भगवन्

गोरा – श्वेत

चाँद – चंद्र

बात वाक्य की

1. **वाक्य परिवर्तन**

(क) पहले जन्मी है जहाँ पर कला।

(ख) ये सोचकर मैं इतराता हूँ।

(ग) उस धरती पर मैंने जन्म लिया।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

- **मन पाखी बन** और **ज्ञान गोता** के प्रश्नों के उत्तरों के लिए निर्देश दें।

9 | संगठन में शक्ति है

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : संगठन में शक्ति है	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने–समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का शुद्ध और भावानुकूल वाचन कर सकेंगे।
2. परस्पर मिलकर काम करने का महत्व बता सकेंगे।
3. आपस में लड़ाई करके काम छोड़ने का क्या परिणाम होता है–इस पर चर्चा कर सकेंगे।
4. सभी अंगों द्वारा दिए गए तर्कों को बता सकेंगे।
5. बता सकेंगे कि सब अंग एक-दूसरे पर कैसे निर्भर हैं।
6. कान और जीभ द्वारा दिए गए तर्कों पर टिप्पणी कर सकेंगे।
7. पाठ में आए कठिन शब्दों और मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।

मूलभाव

आपस में मिल-जुलकर रहना, अपना-अपना दायित्व समझना तथा दूसरे के कार्यों को महत्व देना है। मिलकर काम करने तथा अलग-अलग रहने के परिणाम।

शिक्षण विधि

पाठारंभ पूर्व

- छात्रों से शरीर के अंगों के बारे में चर्चा करें। उनसे पूछें कि आँखें न हों तो जीवन का क्या हाल हो सकता है?
- इस प्रकार शरीर के अन्य अंगों के कार्य और उनके महत्व पर चर्चा करें।

पाठारंभ

- अध्यापक छात्रों के सामने सस्वर आदर्श वाचन करें।
- छात्रों से अनुकरण वाचन कराएँ।
- अनुकरण वाचन में स्वर के आरोह-अवरोह पर ध्यान दें।
- प्रत्येक अंग द्वारा अपने कार्य की प्रशंसा पर छात्रों से जमकर बात करें, उनकी राय पूछें।
- पेट की कार्यप्रणाली पर चर्चा करें। उन्हें बताएँ कि कैसे अन्न से रस, रक्त आदि की प्रक्रिया से व्यक्ति में शक्ति/ऊर्जा आती है।
- सभी अंगों की कार्यप्रणाली पर चर्चा करें।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. हाथ ने अपने को बड़ा सिद्ध करने के लिए कहा कि वे सारे दिन मेहनत करते हैं, बोझा उठाते हैं, मकान बनाते हैं, पत्थर तोड़ते हैं, सुंदर बाग-बगीचे लगाकर सारा वातावरण शुद्ध करते हैं और नालियाँ खोदते हैं। पाँव ने अपने को हाथ से बेहतर सिद्ध करते हुए कहा कि वे ही हैं जो सबको एक जगह से दूसरी जगह पर ले जाते हैं।
2. कान ने स्वयं को बड़ा बताने के लिए तर्क दिया कि वह सारे जहान की खबरें सुनकर सबको बताता है कि कहाँ, कब, क्या हो रहा है या होगा।
3. पेट के आराम करने पर शरीर के सभी अंग बेहाल हो गए। हाथ-पाँव ढीले पड़ गए, आँखें अलसाई-सी हो गईं, दिमाग अजीब-सी परेशानी अनुभव करने लगा।

लेखिनी से

1. सुनने का काम कान से, सूँघने का काम नाक से, देखने का काम आँख से और चखने का काम जीभ से होता है।
2. मिलकर काम करने से एकता बढ़ती है, काम सुचारू रूप से और ठीक समय पर हो जाता है।
3. दिल-दिमाग और पेट में से हम दिल-दिमाग को अधिक महत्वपूर्ण मानते हैं जो हमें सही समय पर सही काम करने की सोच देताहै।

   पेट का भी अपना महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि यदि पाचन क्रिया ठीक नहीं है तो दिल-दिमाग होते हुए भी शरीर बेजान रहेगा।
4. पाठ के क्रमानुसार हैं—हृदय, हाथ, पाँव, कान, जीभ और पेट।
5. क. (i) पेट को सबक सिखाने के लिए

   ख. (i) सोच-विचार करने का

भाषा से

बात वर्ण की

बच्चे स्वयं पढ़ें। अध्यापक अंतर समझाएँ।

बात शब्द की

1. बच्चे स्वयं लिखें।
2. खबर – खबरें, जीभ – जीभें, पुस्तक – पुस्तकें, छुट्टी – छुट्टियाँ, लड़की – लड़कियाँ, रोटी – रोटियाँ
3. मज़बूत – दृढ़, सबक – पाठ, ताकत – शक्ति, गुलामी – दासता, खिलाफ़ – विरुद्ध, रास्ता – मार्ग, इलाज – चिकित्सा

बात वाक्य की

1. (क) सोच-समझकर काम करो।
   (ख) क्या मुझे बार-बार कहना पड़ेगा।
   (ग) फूल-सी कोमल बच्ची बीमार पड़ गई।
2. (क) हम सारा दिन काम **करते** हैं और तुम निठल्ले बैठे **रहते** हो।
   (ख) आँखें रास्ता न **दिखातीं**, तो तुम गड्ढे में गिर **पड़ते**।
   (ग) हम चबा-चबाकर न **खाएँ**, तो पेट में भोजन पत्थर की तरह धरा **रह** जाए।

भाषा प्रयोग

- (क) (*iii*) अपनी प्रशंसा खुद करना (ख) (*i*) मर जाना
  (ग) (*ii*) शक्ति न रहना
  (क) **अपने मुँह मियाँ मिट्ठू बनने** से कोई फ़ायदा नहीं, जब-तक दूसरे आपके कार्य की प्रशंसा न करें।
  (ख) हमारी वीरता को देखकर कई विदेशी **ढेर हो गए**।
  (ग) पुलिस को आते देखकर चोर के **हाथ-पाँव ढीले पड़ गए**।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

नया-निराला

छात्रों की अतिरिक्त जानकारी के लिए है।

- **मन पाखी बन** और **ज्ञान गोता** के लिए अध्यापक छात्रों को उचित निर्देश दें।

10 | दीपों का पर्व

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : दीपों का पर्व	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने और समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का सस्वर शुद्ध वाचन कर सकेंगे।
2. 'दीपावली' शब्द का अर्थ बता सकेंगे।
3. पाँच दिनों तक दीपावली मनाए जाने का कारण बता सकेंगे।
4. दीपावली मनाने का कारण बता सकेंगे।
5. दीपावली से जुड़ी महापुरुषों की घटनाओं का उल्लेख कर सकेंगे।
6. बाज़ारों की सज-धज का वर्णन कर सकेंगे।
7. जुआ खेलने की निंदा कर सकेंगे।
8. अपने-अपने घर मनाई गई दीपावली का वर्णन कर सकेंगे।

मूलभाव

भारत उत्सवधर्मी देश है। यहाँ जो भी उत्सव-त्योहार मनाए जाते हैं उनका किसी न किसी रूप में कृषि से संबंध होता है। दीपावली भी ऐसा ही त्योहार है। प्रस्तुत पाठ में दीपावली मनाने का कारण, तरीका और महत्व बताया गया है।

शिक्षण विधि
पाठारंभ पूर्व ◆ अध्यापक छात्रों से त्योहारों के बारे में चर्चा करें और पूछें–कुछ दिन पहले कौन-सा त्योहार मनाया था? उस दिन क्या किया? त्योहार कैसे मनाया? आदि।

- धीरे-धीरे छात्रों को दीपावली के प्रसंग तक ले आएँ और तब कहें कि आज हम 'दीपावली' शब्द का अर्थ जानेंगे और जानेंगे कि दीपावली क्यों मनाई जाती है।

पाठारंभ

- अध्यापक पाठ का आदर्श वाचन करे।
- छात्रों से अनुकरण वाचन कराएँ। सभी छात्रों को वाचन में शामिल करें।
- कृषि की चर्चा करें और खेती के साथ त्योहारों का संबंध बताएँ।
- 'दीपावली' शब्द कैसे बनता है? उसका क्या अर्थ है? यह कैसे मनाई जाती है? आदि पर विस्तार से चर्चा करें।
- बाज़ारों की रौनक की चर्चा करें। छात्रों से मिठाई और पटाखे आदि से होने वाली बीमारियों/हानियों पर खुलकर बात करें।
- विचारों के प्रकाश का क्या तात्पर्य है? इसका अर्थ समझाएँ।
- कठिन शब्दों के अर्थ व प्रयोग पर ध्यान दें।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. मन में उत्साह, उमंग, उल्लास पैदा करने के लिए, रोज के जीवन को गति देने के लिए नई फ़सल के घर आने पर, लोग अपनी खुशियों को प्रकट करने के लिए त्योहार मनाते हैं।
2. दीपावली का अर्थ है—दीपों की अवली या दीपों की पंक्ति।
3. हनुमान जी ही श्रीराम के अयोध्या लौटने का संदेश लेकर आए थे, इसलिए दोपहर को हनुमान जी की पूजा की जाती है।
4. भैया दूज के दिन बहनें अपने भाइयों के माथे पर तिलक लगाकर अपने स्नेह भरे संबंधों को मज़बूत करती हैं।

लेखिनी से

1. दीपावली मनाने के निम्नलिखित कारण हैं—

   (क) दीपावली कार्तिक मास की अमावस्या को मनाई जाती है। इस दिन श्रीराम रावण का वध करके अयोध्या वापस आए थे। उनके स्वागत में अयोध्यावासियों ने घरों में दीपक जलाकर खुशी प्रकट की थी।

(ख) भगवान महावीर तथा स्वामी दयानंद सरस्वती ने इसी दिन निर्वाण प्राप्त किया था।

(ग) नई फ़सल आने की खुशी में दीपावली मनाते हैं।

2. दीपावली का त्योहार वर्षा ऋतु के बाद आता है। वर्षा के कारण घरों में सीलन हो जाती है तथा मच्छर-मक्खी, मकड़ी और कीटाणु पैदा हो जाते हैं जिसके कारण तरह-तरह की बीमारियाँ फैल जाती हैं। इन सभी से बचाव के लिए सफ़ाई-पुताई की ज़रूरत पड़ती है।

3. गोवर्धन का अर्थ है—गायों को बढ़ाना। गाय हमें घी, दूध से पुष्ट करती है। खेती में भी उनका महत्वपूर्ण योगदान है। गायों की वंशवृद्धि की कामना करने के लिए गोवर्धन पूजा की जाती है।

4. सभी बच्चे अपने-अपने उत्तर लिखें; जैसे—हमने इस बार दीपावली के दिन रंग-बिरंगे बिजली के बल्बों को जलाकर घर सजाया। शाम के समय नए कपड़े पहने, परिवार के सदस्यों के साथ गणेश—लक्ष्मी का पूजन करके मिठाइयाँ खाईं। पड़ोसियों और रिश्तेदारों को प्रसाद वितरण किया और खूब सारे पटाखे जलाकर दीपावली मनाई।

5. क. (*iii*) नए बरतन   ख. (*iv*) धनतेरस, गोवर्धन पूजा, भैया दूज

भाषा से

बात वर्ण की

1. अर्थ   पर्व   अर्थात्   कार्तिक   वर्षा   गोवर्धन   निर्भर   सार्थक   मूर्ति

2. ऋ + त् + उ
क् + ऋ + ष् + इ
क् + ऋ + ष् + ण् + अ

बात शब्द की

(क) बनाए (ख) बनाती हैं (ग) खाई (घ) खरीदेंगे (ङ) लेकर आए थे

बात वाक्य की

1. (क) का, में, की, से, से, की

(ख) को, से, से

2. छात्र स्वयं करें।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

- **मन पाखी बन** और **ज्ञान गोता** में दी गई गतिविधियों के लिए अध्यापक छात्रों को उचित निर्देश दें और छात्र स्वयं करें।

11 | आओ बच्चो! मिलकर कह दें

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : आओ बच्चो! मिलकर कह दें	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने-समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का सस्वर वाचन कर सकेंगे।
2. असहाय निरीह बच्चों के प्रति संवेदनशील बन सकेंगे।
3. जाति-धर्म के बंधन का नहीं, बल्कि इनसानियत का पाठ पढ़ेंगे और मैत्री भाव की सराहना कर सकेंगे।
4. किसी भी कार्य को सोच-समझकर ही करने पर बल देंगे।
5. दूसरे के हाथों में कठपुतली बनकर काम करने वालों के हाल पर टिप्पणी कर सकेंगे।
6. आपस में प्रेमपूर्वक साथ-साथ रहकर जीवन की बगिया को महकाने का अर्थ बता सकेंगे।
7. कविता का समूह-पाठ कर सकेंगे।

मूलभाव

प्रस्तुत कविता आपस में छोटे-बड़े, अमीर-गरीब का भेदभाव मिटाकर साथ रहना सिखाती है। बच्चे एक गरीब मज़दूर के बच्चे के साथ भी खेलना चाहते हैं और संसार में प्रेम के फूल खिलाना चाहते हैं।

शिक्षण विधि
पाठारंभ पूर्व ◆ किस बच्चे ने कब-कब किस-किस की मदद की है? ◆ मदद करने का कारण, प्रभाव आदि पर विस्तार से चर्चा करें।

- चर्चा करें कि मिल-जुलकर रहने, काम करने का क्या प्रभाव पड़ता है।
- छात्र कैसे सड़ती गलियों को महका सकते हैं? इस पर विस्तार से बात करें।

पाठारंभ

- अध्यापक कविता का दो-तीन बार आदर्श वाचन करें। छात्रों से अनुकरण वाचन कराएँ।
- जाति, धर्म-बंधन की पंक्ति पढ़ते हुए नाक-भौं चढ़ाएँ तथा हेयता के भाव से देखें।
- पाठ का वाचन अभिनय सहित होना चाहिए।
- 'बच्चे को बच्चा रहने दो' का अर्थ समझाएँ।
- जाति, धर्म, धन आदि विष कैसे हो सकते हैं—इसे स्पष्ट करें।
- आपस में लड़ने के परिणाम पर चर्चा करें।
  'सड़ती गलियाँ', 'प्यार की कलियाँ' आदि का अर्थ स्पष्ट करें।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. बच्चे जाति, धर्म और धन के विष से दूर रहना चाहते हैं। वे बड़ों से आपसी वैर नहीं सीखना चाहते।
2. बच्चे आपस में मिलकर, साथ खेलकर प्यार की कलियाँ खिला सकते हैं।

लेखिनी से

1. कवि सड़क पर बैठे बच्चे को भी टोली में इसलिए शामिल करना चाहते हैं, क्योंकि वह सड़क के किनारे बहुत देर से अकेला बैठा है।
2. बच्चे को जाति, धर्म, धन (अमीर-गरीब) का भेदभाव नहीं सिखाना चाहिए। समाज की कुरीतियों से बच्चे को बचे रहने की बात की गई है।
3. बच्चे दुनिया की सड़ती गलियों को प्यार के साथ, आपस में मिल-जुलकर, खेलकर, वस्तुओं को बाँटकर प्यार की कलियों से महका सकते हैं। दुनिया में अमन का संदेश फैला सकते हैं।
4. आओ बच्चो! आओ मिलकर
   हम खिला दें प्यार की कलियाँ,
   आओ, मिलकर हम महका दें
   इस दुनिया की सड़ती गलियाँ।
5. क. (*iii*) जाति, धर्म, धन की असमानता को
   ख. (*i*) वही करना पड़ता है जो बड़े चाहते हैं

भाषा से

बात वर्ण की

माँ **क्यूँ** कलि**याँ** गलि**याँ** **ऊँ**चा कक्षा**एँ**

बात शब्द की

1. बड़ा – छोटा विष – अमृत
   मिलना – बिछड़ना अच्छा – बुरा
   सच – झूठ
2. कुम्हार – मिट्टी के बरतन बनाने वाला
   दरज़ी – कपड़े सिलने वाला
   सुनार – सोने के गहने बनाने वाला
   बढ़ई – लकड़ी का काम करने वाला
   लुहार – लोहे का काम करने वाला
3. (क) उसके माता-पिता की **भी** मजबूरी है।
   (ख) वह **भी** खेल सकता है।
   (ग) उसका मन **भी** खेलने को बहुत करता है।
   (घ) वह आएगा **भी**?

बात वाक्य की

1. वह **कब से** मेरा इंतज़ार कर रहा है।
   तुम **कब से** खाना खा रहे हो।
   हम **कब से** जाने के लिए बैठे हैं।
2. **तुम** सवेरे उठकर पार्क में दौड़ लगाया करो।
   मुझे गोल-गप्पे खाने अच्छे लगते हैं।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

- **मन पाखी बन** एवं **ज्ञान गोता** के प्रश्न छात्र स्वयं करें।

12 | फूलों का नगर

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका			
पुस्तक	: नवीन संकल्प–4		
विषय	: हिंदी	**दिनांक**	: ....
उपविषय	: फूलों का नगर	**अवधि**	: ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने और समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का सस्वर शुद्ध वाचन कर सकेंगे।
2. गुरु के गुरुकुल के वातावरण पर चर्चा कर सकेंगे।
3. गुरु द्वारा दी गई 'दीक्षा' को लिख सकेंगे।
4. दोनों शिष्यों के आचरण को विस्तार से बता सकेंगे तथा टिप्पणी कर सकेंगे।
5. गुरु की आज्ञा मानने वाले तथा नहीं मानने वाले कैसे प्रभावित होते हैं, इसका उल्लेख कर सकेंगे।
6. पाठ में आए अच्छे कथनों को छाँट सकेंगे। बता सकेंगे कि शांतनु और अमृत में उन्हें कौन-सा पात्र अच्छा लगा और क्यों?
7. पाठगत प्रश्नों के उत्तर दे सकेंगे।

मूलभाव

गुरु का समदर्शी होना, गुरु की आज्ञा मानने और नहीं मानने के परिणाम, पेड़-पौधों, फूल-फलों से प्रकृति एवं नगर की शोभा और उनके लाभ।

शिक्षण विधि
पाठारंभ पूर्व ◆ पाठ पढ़ाने से पहले छात्रों को गुरुभक्ति की कोई कहानी सुनाएँ (धौम्य ऋषि-उपमन्यु आदि की)।

- गुरुवचनों के पालन के लाभों से परिचित कराएँ और बताएँ कि कैसे गुरु की आज्ञा के पालन से सुख-शांति मिलती है और अवज्ञा से कैसे दुखी हो जाते हैं। आइए, इसी संदेश को पढ़ते हैं, इस पाठ में–

पाठारंभ

- अध्यापक पाठ का आदर्श वाचन करें।
- छात्रों से अनुकरण वाचन कराएँ।
- छात्र गुरु, शांतनु तथा अमृत द्वारा कहे गए संवादों को तदनुसार पढ़ें और इस पर ध्यान दें।
- अमृत और शांतनु के व्यवहार की जमकर प्रशंसा और आलोचना करें।
- प्रकृति हमारे लिए कैसे उपयोगी हो सकती है? इस पर टिप्पणी करें।
- गुरु की आज्ञा मानने के लाभ की चर्चा करें और बताएँ कि सच्चा गुरु कैसे मंगलकामना करता है।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. गुरु वशिष्ठ अमृत और शांतनु से बहुत प्रसन्न इसलिए थे, क्योंकि दोनों शिष्य दिन-रात की परवाह किए बगैर आश्रम का कार्य किया करते थे तथा अपने गुरु की सेवा करते थे।
2. बगीचे में अमृत के मन में विचार आया कि शत्रु के नगर में प्रवेश के समय यदि उनके सैनिक मधुमक्खियों के छत्तों पर पत्थर मारकर छिप जाएँ तो वे शत्रु सैनिकों पर टूट पड़ेंगी और शत्रु जान बचाकर भाग जाएँगे। अतः शांतनु की सेना को अमृत ने मधुमक्खियों के सहयोग से भगा दिया।

लेखिनी से

1. गुरु जी ने अमृत और शांतनु को दो बातें बताईं–
   (*i*) अहिंसा का मार्ग अपनाएँ।
   (*ii*) सदा प्रकृति की रक्षा करें, जिससे उनके राज्य में सदा खुशहाली और संपन्नता रहे।
2. शांतनु के राज्य में हरे-भरे वृक्षों के काटने के कारण सूखा पड़ने लगा। गिनती के पेड़ शेष रहने से पर्यावरण असंतुलित हो गया।
3. अमृत ने शांतनु को कई बोरे भरकर फूलों के बीज दिए।
4. (ग) अमृत की दूरदर्शिता और सूझ-बूझ के कारण।

भाषा से

बात वर्ण की

प्रेम – प् + र् + ए + म् + अ

शिष्य – श् + इ + ष् + य् + अ

शिक्षा – श् + इ + क् + ष् + आ

वृक्ष – व् + ऋ + क् + ष् + अ

अमृत – अ + म् + ऋ + त् + अ

बात शब्द की

1. प्रसन्न – (खुश) क्लेश नाराज़

   मार्ग – माँगना मज़ा (रास्ता)

   वृक्ष – रीछ वृद्ध (पेड़)

   युद्ध – योद्धा (लड़ाई) झगड़ा

2. प्रभु + ता – प्रभुता अधिक + ता – अधिकता

   लघु + ता – लघुता साधु + ता – साधुता

   प्रसन्न + ता – प्रसन्नता

3. असमान – समान न होना

   अहित – हित न करना

   असत्य – झूठ बोलना

बात वाक्य की

1. युद्ध – क्रांतिकारियों ने **युद्ध** में विजय पाई।

   राजा – **राजा** ने अपनी प्रजा के लिए अच्छे-अच्छे काम किए।

   शांति – बच्चे **शांति** से खाने का इंतजार कर रहे हैं।

2. (क) ☑ (ख) ☒ (ग) ☑ (घ) ☒ (ङ) ☑

3. (क) इसलिए (ख) और (ग) क्योंकि

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

- **मन पाखी बन** और **ज्ञान गोता** के लिए अध्यापक छात्रों को उचित निर्देश दें।

13 | हकीम अजमल खाँ

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : हकीम अजमल खाँ	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने और समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का शुद्ध वाचन कर सकेंगे।
2. वे बता सकेंगे कि खाँ साहब ने कौन-कौन-सी अच्छी आदतें घर से सीखीं।
3. हकीम जी द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख कर सकेंगे।
4. हकीम साहब के देश प्रेम का उदाहरण दे सकेंगे और बता सकेंगे कि हकीम जी कैसे रहमदिल थे!

मूलभाव

हकीम अज़मल खाँ जैसे रहमदिल और महान व्यक्ति के जीवन से प्रेरणा लेना।

शिक्षण विधि

पाठारंभ पूर्व

- छात्रों से उनके पड़ोस में रहने वाले डॉक्टर, समाजसेवी, नेक-इनसानों के बारे में चर्चा करें। उनसे पूछें कि वे आदमी आपको क्यों अच्छे लगते हैं। क्या आप भी चाहते हैं कि आप दूसरों को अच्छे लगें? यदि हाँ, तो उसके लिए क्या करेंगे? आदि-आदि चर्चा करते-करते कहें कि आज हम एक नेकदिल आदमी के बारे में जानेंगे जिन्होंने लोगों की जानें बचाईं, सेवा की और कॉलेज की स्थापना की।

पाठारंभ

- अध्यापक पाठ का आदर्श वाचन करें।
- छात्रों से अनुकरण वाचन कराएँ।
- छात्रों को समझाएँ कि परोपकार से लोगों का यश फैलता है। जो लोग परोपकार नहीं करते, महज स्वार्थ के लिए जीते हैं उन्हें पशु-पक्षी भी छूना पसंद नहीं करते।
- हकीम द्वारा किए गए कार्यों—जामिया मिलिया इस्लामिया बनाने में योगदान, बूँदी के महाराज द्वारा दिए गए धन का दान, विद्यालय खोलना, तिब्बिया कॉलेज बनाना, समाज सेवा करना, हिंदू-मुसलमानों को एक करके अँगरेज़ों के विरुद्ध लड़ना आदि की विस्तार से चर्चा करें।
- उनके रहमदिल (दयालु) होने की घटना को भी बताएँ और छात्रों से पूछें हकीम जी द्वारा किए गए कार्यों में से उन्हें सबसे ज़्यादा कौन-सा कार्य पसंद आया।
- एक बार पुनः संक्षेप में हकीम जी की जीवनी सुनाएँ।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. जो व्यक्ति समाज की भलाई के लिए दिन-रात जुटे रहते हैं, उन व्यक्तियों के नाम पर सड़कों तथा स्थानों के नाम रखे जाते हैं।
2. अजमल खाँ ने प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही प्राप्त की।
3. एक बार रामपुर के नवाब का इलाज करने हेतु जाते वक्त रेल के बहुत-से डिब्बे इंजन से टूटकर नदी में गिर गए, परंतु अजमल खाँ का डिब्बा पुल के बाहर रुक गया और वे बाल-बाल बच गए। इस उदाहरण से यह पता चलता है कि दूसरों की रक्षा करने वाले की भगवान स्वयं रक्षा करता है।

लेखिनी से

1. अजमल खाँ ने अपने घर से परिश्रम, दया-भावना, ईश्वर और गरीबों के प्रति प्रेम तथा भलाई करने जैसी अच्छी आदतें सीखीं।
2. अजमल खाँ ने चाँदनी चौक बल्लीमारान में एक विद्यालय खोला। इसके अतिरिक्त उन्होंने तिब्बिया कॉलेज की नींव डाली तथा 'जामिया मिलिया इस्लामिया' विद्यालय को बनाने में भी बढ़-चढ़कर योगदान दिया।
3. हकीम अजमल खाँ के रहमदिल और परिश्रमी स्वभाव, ईश्वर के प्रति श्रद्धा, गरीबों के प्रति प्रेम, समाज में लोगों की शिक्षा के लिए उचित अवसर देने जैसे गुणों ने हमें अत्यंत प्रभावित किया।
4. (ग) वे घायल रेलयात्रियों को बचाने में जुट गए थे।

भाषा से

बात वर्ण की

ड़ और ढ़ के उच्चारण में अंतर बताएँ। बोलने का अभ्यास करवाएँ।

ड़ – लड़की, कड़की, कड़क, मोड़

ढ़ – बढ़ाई, बढ़ई, चढ़ाई, कढ़ाई

बात शब्द की

1. विशेषण – दयालु, रहमदिल, रईस, गरीब
विशेष्य – महिला, इंसान, मालिक, मज़दूर

2. (*iii*) भलाई

3. अनपढ़, देशप्रेमी, समाजसेवी

4. नदियाँ, घाटियाँ लड़ाइयाँ, बुराइयाँ
आदतें, रेलें/रेलों कुरते, पैसे

बात वाक्य की

1. (क) तुम्हारे (ख) उसका (ग) मुझे (घ) वे

2. (क) इस समाज में कोई स्त्री-पुरुष अनपढ़ न रहे।
(ख) वे दुखियों की सेवा में जुट गए।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

- **नया-निराला** अध्यापक आवश्यक निर्देश दें और छात्र स्वयं करें।
- **मन पाखी बन** और **ज्ञान गोता** छात्र स्वयं करें।

14 | प्रकृति

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : प्रकृति	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ पढ़ने और समझने के बाद छात्र इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का सस्वर शुद्ध वाचन कर सकेंगे।
2. वे बता सकेंगे कि प्रकृति ने सुंदर बाग-बगीचे क्यों लगाए?
3. प्रकृति ने इसे कैसे महकाया, यह बता सकेंगे।
4. प्रकृति ने प्राणियों तथा मनुष्य की रचना क्यों की, यह बता सकेंगे।
5. पेड़-पौधे मनुष्य के लिए क्या करते थे, यह बता सकेंगे।
6. मनुष्य ने प्रकृति को किस तरह नुकसान पहुँचाया, यह बता सकेंगे।
7. प्रकृति से छेड़छाड़ का क्या परिणाम निकला यह भी बता सकेंगे।
8. मनुष्य को प्रकृति ने क्या सीख दी, यह बता सकेंगे।

मूलभाव

प्रकृति के साथ मनुष्य तथा अन्य जीवों का परस्पर संबंध, प्रकृति अर्थात पेड़-पौधों को काटने का दुष्परिणाम तथा प्रकृति की रक्षा करने का संदेश देना।

शिक्षण विधि

पाठारंभ पूर्व

- अध्यापक छात्रों से पूछें कि आपके आस-पास के इन हरे-भरे पेड़ों को किसने लगाया होगा?
- उन्होंने ये पेड़ क्यों लगाए होंगे?
- वे हमें पेड़ लगाने के लिए क्यों प्रेरित करते हैं आदि प्रश्नों एवं उनसे प्राप्त उत्तरों पर चर्चा करने के बाद पाठ शुरू करें।

पाठारंभ

- शिक्षक पाठ का सस्वर वाचन करें तथा छात्रों से अनुकरण वाचन करवाएँ।
- कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ, पाठ का भाव एवं सरलार्थ स्पष्ट करें।
- बच्चों से पाठ से जुड़े हुए प्रश्न करते हुए पाठ को आगे बढ़ाएँ।
- मनुष्य तथा अन्य जीव-जंतुओं को प्रकृति से मिले वरदानों की चर्चा अवश्य करें।
- मनुष्य द्वारा प्रकृति के विनाश तथा उनसे उत्पन्न दुष्प्रभावों से छात्रों को अवश्य परिचित कराएँ।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. 'प्रकृति' का स्वभाव बहुत हँसमुख था। वह सलोनी-सी थी। वह रोनी सूरत कभी नहीं बनाती थी।
2. पेड़-पौधे साफ़ हवा देते हैं और गंदी हवा स्वयं लेते हैं।
3. मानव ने वृक्ष काट दिए। इस कारण साफ़ हवा भला कहाँ से आती। धरती-आसमान इसी कारण से विषमय हो गए।

- 4-5 स्वयं कीजिए।

लेखिनी से

1. कभी नहीं भाता था उसको
रखना सूरत रोनी।
2. क्योंकि इतनी सुंदर प्रकृति को देखने, भोगने वाला कोई नहीं था।
3. मानव अपने ज्ञानी और विज्ञानी गुणों के कारण सर्वश्रेष्ठ बना।
4. प्रकृति के सुंदर परिश्रम का परिणाम अच्छा न हुआ। मानव ने पेड़ काटकर धरती-आसमान को विषमय बना दिया।
5. जैसी करनी, वैसी भरनी।

भाषा से

बात वर्ण की

क् + र् + अ	क् + ऋ
व् + र् + अ	व् + ऋ
श् + र् + अ	श् + ऋ
द् + र् + अ	द् + ऋ

बात शब्द की

1. चेहरा, परिश्रम, स्वच्छ, संध्या, सुंदरता, विष
2. सर्वश्रेष्ठ मानव — सुंदर बाग
   गंदी हवा — सलोनी प्रकृति
   शीतल चंदा — ऊँचा महल
   हरे-भरे वृक्ष — सत्य कथन

बात वाक्य की

1. (क) मानव की
   (ख) वृक्ष/मानव
2. (क) ज्ञानी और विज्ञानी मानव उनमें सर्वश्रेष्ठ था।
   (ख) वृक्ष उसकी साँसों में साफ़ हवा भरा करते थे।
3. (क) **टूट पड़ना**–हरे-भरे वृक्ष देखकर मानव उन्हें काटने के लिए टूट पड़ा।
   (ख) **जैसी करनी वैसी भरनी**–बुरे कार्य करोगे, तो वैसा ही फल मिलेगा। सही है–जैसी करनी, वैसी भरनी।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

- **मन पाखी बन** और **ज्ञान गोता** के प्रश्नों पर कक्षा में चर्चा करें।

15 | जन्मदिन के बहाने

पाठ-योजना

अध्यापक/अध्यापिका	
पुस्तक : नवीन संकल्प–4	
विषय : हिंदी	**दिनांक** : ....
उपविषय : जन्मदिन के बहाने	**अवधि** : ....

शिक्षण उद्देश्य

पाठ को पढ़ने और समझने के बाद छात्र-छात्राएँ इस योग्य हो जाएँगे कि वे–

1. पाठ का सस्वर शुद्ध वाचन कर सकेंगे।
2. संवादों का पात्रानुकूल पाठ कर सकेंगे।
3. माता जी की बात मानने की प्रशंसा कर सकेंगे।
4. अपने कार्यक्रम का विवरण लिख सकेंगे।
5. दूसरों को साथ लेकर उत्सव-त्योहार मनाने का महत्व बता सकेंगे।
6. 'सच्चा सुख' पर टिप्पणी कर सकेंगे।
7. कहानी को भावपूर्ण ढंग से सुना सकेंगे।

मूलभाव

प्रस्तुत कहानी दो जुड़वाँ बच्चियों की कहानी है। अपने जन्मदिन को मनाने की योजना स्वीकृत होने के उत्साह में वे अपनी माँ की सारी बातें मानती हैं। अनजाने में ही उनसे सिलाई का ज्ञान लेती हैं और अपने बनाए कपड़े अपनी नौकरानी की बेटी को देकर जो सच्चा सुख वे हासिल करती हैं, उसका बड़ा ही भावपूर्ण वर्णन कहानी में किया गया है।

शिक्षण विधि
पाठारंभ पूर्व ◆ पाठ पढ़ाने से पहले अध्यापक छात्रों से उनके जन्मदिन के बारे में बात करें। पूछें कि उन्होंने अपना जन्म-दिन कैसे मनाया? कौन-कौन शामिल हुए? किसने क्या कहा? क्या कहकर आशीर्वाद दिया आदि? जब छात्र रुचि लेने लग जाएँ, तभी पाठ आरंभ करें।

पाठारंभ

- अध्यापक पाठ का आदर्श वाचन करें।
- छात्रों से अनुकरण वाचन कराएँ।
- अनुकरण वाचन में अर्चना और अर्पिता के उल्लास तथा भावुकता का ध्यान रखें।
- अर्पिता और अर्चना द्वारा सिलाई सीखने की प्रशंसा करें।
- माँ की दिल खोलकर प्रशंसा करें जो नौकर के बच्चों का जन्मदिन मनाना नहीं भूलतीं।
- अपने बेटियों में संस्कार डालने के तरीके की भी प्रशंसा करें।
- कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ तथा वाक्यों में प्रयोग कराएँ।
- छात्रों से पाठ का सार लिखवाएँ।

पाठ्यपुस्तक के उत्तर

मुख से

1. अर्पिता और अर्चना ने कार्यक्रम बनाया कि पहले वे पिकनिक मनाने चलेंगे, उसके बाद पिक्चर देखेंगे और रात का खाना होटल में खाएँगे। अर्पिता ने आइसक्रीम खाने की इच्छा भी ज़ाहिर की।
2. माँ ने उनके कार्यक्रम को माना और उसमें सुधार करते हुए कहा कि वे छाया के लिए फ्रॉकें सिलेंगे और उसके जन्मदिन पर उसे उपहार में देंगे। माँ ने फ्रॉकों की कटिंग की और अर्पिता-अर्चना ने मिलकर फ्रॉकें सिलीं।
3. छाया लक्ष्मी की बेटी थी। लक्ष्मी अर्चना और अर्पिता के घर काम करती थी। छाया को जन्मदिन पर दोनों बहनों के हाथों से सिली हुई सुंदर-सुंदर फ्रॉकें उपहार में मिलीं और स्वादिष्ट खाना भी मिला।

लेखिनी से

1. माँ का सुझाव हमें बहुत ही अच्छा लगा। उन्होंने छाया का भी जन्मदिन मनाया। अर्पिता और अर्चना को सिलाई का ज्ञान हुआ और उन्होंने सच्चे सुख का अर्थ जाना। माँ उन्हें यह सीख देना चाहती थी कि दूसरों को सुख देना ही सच्चा आनंद है।
2. बहुत सारी फ्रॉकों को एक साथ पाकर छाया खुशी से रोने लगी। इससे पहले उसे जन्मदिन का ऐसा उपहार नहीं मिला था।
3. हमें पाठ में से माँ, अर्पिता, अर्चना और छाया में से सबसे अच्छी माँ लगी, क्योंकि माँ की योजना के कारण ही दोनों बहनों ने सिलाई सीखी और छाया का जन्मदिन बिना किसी भेदभाव के खुशी-खुशी मनाया।
4. (क) अर्चना ने मम्मी से।
   (ख) अर्पिता ने मम्मी से।
5. (ख) पिकनिक मनाना
   (ग) पिक्चर देखना
   (क) होटल में खाना खाना

भाषा से

बात वर्ण की

1. अर्चना अर्पिता जन्मदिन धन्यवाद
2. स्वीकृति – स् + व् + ई + क् + ऋ + त् + इ
   पृष्ठ – प् + ऋ + ष् + ठ् + अ
   फ़्रॉक – फ़् + र् + ऑ + क् + अ
   क्रीम – क् + र् + ई + म् + अ

बात शब्द की

1. छात्र स्वयं करें।
2. प्रसन्नता कोमलता लघुता गुरुता श्रेष्ठता
3. **समान अर्थ वाले शब्द**

महीना	–	माह	रात	–	निशा
बहन	–	भगिनी	खुशी	–	प्रसन्नता
तारीख	–	दिनांक	अनोखा	–	अनुपम
			गृह	–	घर

बात वाक्य की

(क) अर्पिता की माँ ने कहा **कि** हम सब मिलकर काम करेंगे।
(ख) तीनों ने रंग-बिरंगे कपड़ों **की** ढेर-सी फ़्रॉकें तैयार कर दीं।
(ग) हम सबने भी प्रण किया **कि** हम भी दूसरों **की** मदद करेंगे।
(घ) मैं और मेरी सखियाँ भी दूसरों को उपहार देती **हैं**।
(ङ) मेरा भाई भी दूसरों की मदद करता **है**।

विषय संवर्धक क्रियाकलाप

नया-निराला

छात्रों की जानकारी के लिए है।

- **मन पाखी बन** और **ज्ञान गोता** के लिए अध्यापक छात्रों को उचित निर्देश दें।